भौतिक उद्विकास का नियम (Law of Physical Evolution)[1]

भौतिक उद्विकास के नियम को स्पष्ट करने के लिए स्पेन्सर ने तीन मुख्य नियमों तथा चार सहायक मान्यताओं का उल्लेख किया। उनके द्वारा प्रस्तुत यह नियम और मान्यताएँ इस प्रकार हैं :

(1) **शक्ति के स्थायित्व का नियम** (Law of Peristence of Force)—इस नियम के द्वारा स्पेन्सर ने स्पष्ट किया कि जगत के प्रत्येक पदार्थ में एक शक्ति निहित होती है जो कभी समाप्त नहीं होती। यही शक्ति सभी तरह के पदार्थों में होने वाले परिवर्तन का वास्तविक कारण है। इस शक्ति को स्पेन्सर ने एक 'अज्ञेय शक्ति' (unknowable force) कहा क्योंकि किस वस्तु में कितनी शक्ति है, इसे सरलता से नहीं जाना जा सकता।

(2) **पदार्थ के अविनाशी होने का नियम** (Law of Indestructibility of Matter)—स्पेन्सर के अनुसार सम्पूर्ण भौतिक जगत पदार्थ और शक्ति के सम्मिलिन से बना है। सम्पूर्ण जड़ और चेतन जगत में जितने भी पदार्थ विद्यमान हैं, वे कभी नष्ट नहीं होते। अधिक से अधिक पदार्थ का रूप बदल सकता है लेकिन वह समाप्त नहीं होता। उदाहरण के लिए, लकड़ी को जलाने पर वह कोयले के रूप में बदल जाती है लेकिन उसका अस्तित्व समाप्त नहीं होता। (इस नियम को आधुनिक भौतिक विज्ञानी स्वीकार नहीं करते।)

(3) **गति की निरन्तरता का नियम** (Law of Continuity of Motion)—शक्ति की एक प्रमुख विशेषता यह है कि वह सदैव गतिमान होती है। इस गति अथवा ऊर्जा (energy) के रूप में परिवर्तन हो सकता है लेकिन यह पदार्थ में सदैव बनी रहती है।

---

1 "Evolution is an integration of matter and concomitant dissipation of motion during which matter passes from an indefinite, incoherent homogeneity to a definite, coherent heterogenity."
—Herbert Spencer, *First Principles*, p. 358.

Scanned with CamScanner

भौतिक उद्विकास को स्पष्ट करने के लिए स्पेन्सर ने इससे सम्बन्धित जिन चार गौण-मान्यताओं (secondary propositions) का उल्लेख किया, वे इस प्रकार हैं :

(1) पहली मान्यता यह है कि विभिन्न **पदार्थों में जो शक्ति निहित होती है, उनके बीच सदैव एक स्थायी सम्बन्ध बना रहता है।** इसी कारण सभी स्थानों पर भौतिक उद्विकास का नियम समान रूप से काम करता है। स्पेन्सर ने इसे 'शक्ति सम्बन्धों के बीच स्थायित्व की मान्यता कहा। (2) दूसरी मान्यता **'शक्ति के रूपान्तरण तथा सन्तुलन'** (Transformation and Equivalence of Force) से सम्बन्धित है। इसका तात्पर्य है कि पदार्थ की शक्ति गति को तथा गति की शक्ति पदार्थ को प्रभावित करती है। इस रूपान्तरण के बाद भी शक्ति के सन्तुलन में किसी तरह की कमी नहीं आती। उदाहरण के लिए, पानी में एक विशेष शक्ति निहित है लेकिन यदि वह पानी भाप, बर्फ या पुन: बर्फ से पानी बन जाये तो उसकी शक्ति उसी तरह की बनी रहेगी। (3) तीसरी मान्यता यह है कि **'पदार्थ में न्यूनतम प्रतिरोध और अधिकतम आकर्षण'** (Least Resistance and Greatest Attraction in Force) की प्रवृत्ति होती है। प्रत्येक पदार्थ उस दिशा में तेजी से आगे बढ़ता है जहाँ उसका कम से कम प्रतिरोध होता है। उदाहरण के लिए, पानी समतल जगह की तुलना में ढलान की ओर तेजी से बहता है। दूसरी विशेषता यह है कि जहाँ पर कोई पदार्थ पहले से ही जमा होता है, शेष पदार्थ भी वहीं पर एकत्रित होने लगते हैं। (4) यह सच है कि गति की निरन्तरता कभी समाप्त नहीं होती लेकिन गति में कुछ कमी अथवा तीव्रता होते रहने की पूरी सम्भावना रहती है। इसे स्पेन्सर ने 'गति में परिवर्तनशीलता की मान्यता' (Proposition of Alteration of Motion) कहा।

यदि इन सभी नियमों के आधार पर भौतिक उद्विकास को संक्षेप में स्पष्ट किया जाय तो यह कहा जा सकता है कि आरम्भ में विभिन्न पदार्थ एक ढेर या समग्रता के रूप में स्थित थे। पदार्थों के इस ढेर या एकत्रीकरण में एक शक्ति और गति होने के कारण समय बीतने के साथ उनका रूप बदलता गया और वे एक-दूसरे से पृथक् हो गये। इस पृथक्ता के बाद भी उनके बीच एक सम्बद्धता और पारस्परिक निर्भरता बनी रही। सूर्य से अलग होने वाले विभिन्न ग्रहों और नक्षत्रों का निर्माण इसी प्रक्रिया के द्वारा हुआ। इन सभी ग्रहों और नक्षत्रों के बीच एक निश्चित सम्बद्धता, निर्भरता और निश्चितता इसी कारण है कि यह भौतिक उद्विकास के उक्त तीनों प्रमुख नियमों और चार सहायक मान्यताओं के अधीन हैं।

जैविकीय उद्विकास का नियम (Law of Biological Evolution)

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, स्पेन्सर द्वारा प्रस्तुत सामाजिक उद्विकास का सिद्धान्त भौतिक उद्विकास तथा जैविक उद्विकास के नियम पर आधारित है। अत: प्रस्तुत विवेचन में उन नियमों को समझना भी आवश्यक है जो जैविकीय अथवा प्राणीशास्त्रीय उद्विकास से सम्बन्धित हैं। साधारणतया प्राणीशास्त्रीय उद्विकास के जनक के रूप में डार्विन (Darwin) को मान्यता दी जाती है लेकिन स्पेन्सर ने यह दावा किया कि उन्होंने सन् 1859 में डार्विन की पुस्तक 'ओरिजिन ऑफ स्पेसीज' (Origin of Species) प्रकाशित होने से पहले ही अपने कुछ लेखों में उन मान्यताओं को स्पष्ट किया था जिनका डार्विन द्वारा उपयोग किया गया। इस विवाद में न पड़कर यह समझना जरूरी है कि स्पेन्सर ने प्राणीशास्त्रीय उद्विकास को स्पष्ट करने के लिए जिस नियम को सबसे अधिक महत्व दिया, उसे **'योग्यतम का अतिजीवन'** (Survival of the Fittest) कहा जाता है।

डार्विन ने अनेक प्राणियों और उनके अवशेषों का अध्ययन करके 'अस्तित्व के लिए संघर्ष' (Struggle for Existence) का नियम प्रस्तुत किया था। इसके अनुसार सभी प्राणी प्रकृति और अपनी भौतिक दशाओं से अनुकूलन करने के लिए हमेशा संघर्ष करते रहते हैं। इस संघर्ष में जो प्राणी जीत जाते हैं, वे जीवित रहते हैं तथा शेष प्राणी नष्ट हो जाते हैं। यही वह नियम है जिसकी सहायता से प्राणियों की उत्पत्ति, विकास और विनाश को समझा जा सकता है। स्पेन्सर ने अस्तित्व के लिए संघर्ष की जगह 'योग्यतम का अतिजीवन' (Survival of the Fittest) तथा **'प्राकृतिक चयन की प्रक्रिया'** (Process of Natural Selection) जैसे शब्दों का प्रयोग किया। इन्हें स्पष्ट करते हुए स्पेन्सर ने लिखा कि प्राणीशास्त्रीय जगत में सभी प्राणियों को जीवित रहने के लिए प्रकृति से संघर्ष करना पड़ता है। इस संघर्ष में केवल वे प्राणी ही जीवित रहते हैं जो जीवित रहने के लिए सबसे अधिक योग्य होते हैं। जो प्राणी प्रकृति से अपना अनुकूलन नहीं कर पाते, प्रकृति उनका निरसन (elimination) कर देती है अर्थात् उनकी

Scanned with CamScanner

मृत्यु हो जाती है। यही प्राकृतिक चयन की प्रक्रिया है। स्पेन्सर का निश्चित मत है कि सामाजिक उद्विकास की प्रक्रिया भी उन्हीं नियमों से संचालित होती है जो नियम भौतिक तथा प्राणीशास्त्रीय उद्विकास का आधार हैं। इसी दृष्टिकोण से स्पेन्सर ने सामाजिक उद्विकास का एक व्यवस्थित सिद्धान्त प्रस्तुत किया।

सामाजिक उद्विकास का सिद्धान्त
(THEORY OF SOCIAL EVOLUTION)

स्पेन्सर ने भौतिक उद्विकास तथा प्राणीशास्त्रीय उद्विकास के नियमों के आधार पर समाज की संरचना में होने वाले परिवर्तन के जिस रूप को स्पष्ट किया, उसी को उनका 'सामाजिक उद्विकास का सिद्धान्त' कहा जाता है। उन्होंने स्पष्ट किया किया जिस तरह भौतिक उद्विकास की दशा में पदार्थ के अन्दर विद्यमान शक्ति और गति के स्रोत कभी स्पष्ट नहीं होते, उसी तरह सामाजिक संरचना का निर्माण करने वाले तत्वों में कुछ परिवर्तन तो होता है लेकिन उनका सन्तुलन और निरन्तरता समाप्त नहीं होती। डार्विन की कुछ मान्यताओं को स्वीकार करते हुए स्पेन्सर ने लिखा कि समाज के अनुकूलन करने की प्रक्रिया में विभिन्नता आने से ही सामाजिक संरचना में परिवर्तन होने लगता है तथा यह परिवर्तन एक बड़ी सीमा तक प्राणीशास्त्रीय उद्विकास के समान होता है। इस प्रकार भौतिक और प्राणीशास्त्रीय उद्विकास के आधार पर स्पेन्सर ने दो प्रमुख नियमों का प्रतिपादन करके सामाजिक उद्विकास की प्रकृति को स्पष्ट किया। इनमें से पहला नियम 'सरलता से जटिलता का नियम' है तथा दूसरे को 'योग्यतम का अतिजीवन' कहा जाता है। इन्हीं के आधार पर स्पेन्सर के सामाजिक उद्विकास के सिद्धान्त को समझा जा सकता है।

(I) सरलता से जटिलता का नियम (Law of Simple to Complex)

स्पेन्सर से स्पष्ट किया कि आरम्भिक युग में समाज की संरचना आज से बहुत भिन्न थी। अत्यधिक प्राचीनकाल में समाज एक आदिम दशा में था जिसमें लोग खाने योग्य पदार्थों की तलाश में इधर-उधर घूमते रहते थे। रहने की लिए गुफाओं और शरीर को ढँकने के लिए पत्तों और दूसरी वस्तुओं का उपयोग किया जाता था। सम्पूर्ण समाज बहुत सरल और असंगठित था। लोगों के जीवन को एक-दूसरे से जोड़ने वाले कोई नियम नहीं थे। व्यक्तियों के बीच विभिन्नताओं का पूरी तरह अभाव था। यह अनिश्चित और असम्बद्ध समानता की दशा थी। तब से लेकर आज तक समाज अनेक स्तरों से गुजरते हुए एक जटिल समाज के रूप में बदल सका है। **समाज का उद्विकास किन अवस्थाओं में से गुजर कर हुआ,** इसे स्पष्ट करने के लिए स्पेन्सर ने समाज के चार विभिन्न स्तरों का उल्लेख किया जो निम्नांकित हैं :

(1) सबसे आरम्भिक समाजों को हम **'सरल समाज'** कह सकते हैं। समाज का यह रूप समरूप (homogeneous) था जिसमें व्यक्तियों के बीच किसी तरह की असमानता या ऊँच-नीच नहीं थी। सामाजिक संरचना में निहित शक्तियों के कारण लोगों की आवश्यकताओं ने उन्हें इस बात के लिए मजबूर किया कि वे समूह में रहना आरम्भ करें। (2) इसके फलस्वरूप जब अनेक सरल समाज मिलकर साथ-साथ रहने लगे, तब दूसरे स्तर पर **'संश्लिष्ट समाजों'** (Compound Societies) का निर्माण होना आरम्भ हुआ। यह समाज का वह रूप था जिसका निर्माण अनेक परिवारों और समूहों के संगठन से हुआ तथा एक केन्द्रीय शक्ति के द्वारा उनके व्यवहारों को नियन्त्रित किया जाने लगा। कुछ समय तक संश्लिष्ट समाजों का अस्तित्व बना रहने के बाद उनके अन्दर चलने वाली उद्विकासीय प्रक्रिया के प्रभाव से समाज की संरचना में पुनः परिवर्तन होना आरम्भ हुआ। (3) तीसरे स्तर पर जब अनेक संश्लिष्ट समाज मिलकर एक-एक बड़े दल (clan) के रूप में संगठित होने लगे, तब उनकी जटिलता में और अधिक वृद्धि हो गयी। स्पेन्सर ने ऐसे समाजों को **'दोहरे संश्लिष्ट समाज'** (Double Compound Society) कहा। समाज का आकार बढ़ने के साथ ही उनमें एक स्पष्ट राजनीतिक संगठन भी विकसित होने लगा। विभिन्न व्यक्तियों और समूहों की प्रस्थिति में भी कुछ परिवर्तन स्पष्ट होने लगा। यह समरूपता से विषमरूपता और सरलता से जटिलता की ओर होने वाला परिवर्तन था। (4) कालान्तर में दोहरे संश्लिष्ट समाजों अथवा अनेक बड़े-बड़े दलों ने मिलकर जिस वृहत् समाज का निर्माण किया उसने एक राज्य का रूप ले लिया। ऐसे समाज को स्पेन्सर ने **'त्रि-संश्लिष्ट समाज'** (Trebly Compound Society) कहा है। यही समाज का वर्तमान रूप है जिसकी एक पृथक् प्रभुसत्ता, संस्कृति, अर्थव्यवस्था और सामाजिक संरचना होती है। आधुनिक समाज इस त्रि-संश्लिष्ट समाज का ही प्रतिनिधित्व करते हैं। इनकी संरचना काफी जटिल होती है तथा अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सभी व्यक्ति एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं।

Scanned with CamScanner

स्पेन्सर का मानना है कि सामाजिक उद्विकास के प्रत्येक आगामी स्तर पर समाज की संरचना सरलता से जटिलता की ओर बढ़ने लगती है। जैसे-जैसे समाज पहले की तुलना में अधिक जटिल होता जाता है, उसमें विभेदीकरण की प्रक्रिया भी बढ़ती जाती है। विभेदीकरण के कारण समाज में समानता की जगह विभिन्नता के तत्व बढ़ने लगते हैं। इसके बाद भी सामाजिक संगठन अनिश्चित न रहकर निश्चित प्रकृति का बनता जाता है क्योंकि सभी व्यक्तियों और समूहों को कुछ निश्चित नियमों के अनुसार व्यवहार करना आवश्यक हो जाता है। इसका तात्पर्य है कि **सरलता से जटिलता, समरूपता से विषमरूपता और अनिश्चित से निश्चित अन्तिम स्तर के समाज की प्रमुख विशेषताएँ होती हैं।** कोई समाज जब सरलता से जटिलता की ओर बढ़ता है, तब उसमें कुछ अन्य विशेषताओं का भी समावेश हो जाता है। इनमें स्पेन्सर ने निम्नांकित तीन विशेषताओं को अधिक महत्व दिया है :

(1) पहली विशेषता का सम्बन्ध सामाजिक जीवन के आन्तरिक नियमन से है। **आन्तरिक नियमन** का तात्पर्य यह है कि विभिन्न व्यक्ति राज्य के प्रति, विभिन्न संगठनों के प्रति तथा एक-दूसरे के प्रति किस तरह की अन्तःक्रिया करेंगे। इसे स्पष्ट करने के लिए स्पेन्सर ने **सैनिक और औद्योगिक समाज का उदाहरण दिया।** सामाजिक उद्विकास के क्रम में सैनिक समाज दोहरे संश्लिष्ट समाजों की प्रकृति को स्पष्ट करते हैं, जबकि औद्योगिक समाज वर्तमान सामाजिक संरचना से सम्बन्धित हैं। सैनिक समाजों में सरकार का रूप केन्द्रीयकृत होता है अर्थात् समाज की सत्ता किसी एक केन्द्र में स्थित होती है ऐसे समाज में स्तरीकरण की एक कठोर प्रणाली पायी जाती है तथा सम्पूर्ण सामाजिक संगठन पर राज्य का आधिपत्य होता है। सभी लोगों से यह आशा की जाती है कि वे राज्य के हित में काम करें। दूसरी और औद्योगिक समाजों में स्वतन्त्र व्यापार, ऐच्छिक संगठन और सत्ता का विकेन्द्रीकरण कुछ प्रमुख विशेषताएँ हैं। ऐसे समाज में राज्य का कार्य व्यक्तियों का अधिक से अधिक कल्याण करना और उनके हितों का संरक्षण करना होता है। स्पष्ट है कि सामाजिक उद्विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जो सामाजिक संरचना के बदलते हुए आन्तरिक नियमन को स्पष्ट करती है।

(2) स्पेन्सर के अनुसार सरल समाजों की एक प्रमुख विशेषता लोगों के बीच अनिवार्य सहयोग (compulsory co-operation) होना है। सरल समाज जब जटिल समाज में बदल जाता है, तब लोगों के बीच ऐच्छिक सहयोग (voluntary co-operation) बढ़ने लगता है। स्पष्ट है कि सैनिक समाजों में अनिवार्य सहयोग की प्रधानता होती है, जबकि औद्योगिक समाजों में **ऐच्छिक सहयोग की प्रधानता** हो जाती है।

(3) सरलता से जटिलता की दिशा में होने वाले परिवर्तन के फलस्वरूप सामाजिक संरचना का निर्माण करने वाली इकाइयों की संख्या बढ़ने लगती है तथा उनके **प्रकार्य एक निश्चित रूप** लेने लगते हैं। इसी को स्पेन्सर ने अनिश्चिता से निश्चिता की ओर होने वाला परिवर्तन कहा।

(II) योग्यतम का अतिजीवन (Survival of the Fittest)

स्पेन्सर के सामाजिक उद्विकास का दूसरा पक्ष 'योग्यतम की विजय' से सम्बन्धित है। उन्होंने डार्विन के विचारों से प्रभावित होकर यह स्पष्ट किया कि प्रकृति का यह नियम है कि केवल उन्हीं प्राणियों को जीवित रहने का अवसर दिया जाता है जो जीवित रहने के लिए सबसे अधिक योग्य है। जीवित रहने के लिए अयोग्य व्यक्तियों से स्पेन्सर का तात्पर्य निर्धन अथवा नैतिक रूप से हीन व्यक्तियों से नहीं है बल्कि शारीरिक रूप से कमजोर और सामाजिक मानदण्डों से अनुकूलन न कर सकने वाले लोगों से है। मूर्ख, मानसिक रूप से विकृत और अविवेकी लोग भी समाज में रहने के अयोग्य होते हैं। जो व्यक्ति योग्य नहीं होता, उद्विकास की प्रक्रिया के अन्तर्गत प्रकृति उनका निरसन कर देती है अर्थात् उनकी मृत्यु हो जाती है। स्पेन्सर का विचार है कि योग्य लोगों की दशाओं में सुधार करने के लिए राज्य को किसी तरह का हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। सामाजिक उद्विकास का रूप तभी स्वस्थ रह सकता है जब लोगों को प्राणीशास्त्रीय रूप से योग्य बनने के लिए स्वतन्त्र छोड़ दिया जाय। स्पेन्सर का यहाँ तक विचार था कि उद्विकास की प्रक्रिया को स्वाभाविक से क्रियाशील बनाए रखने के लिये यह जरूरी है कि सभी लोग अपने व्यक्तिगत हितों के अनुसार आर्थिक क्रियाएँ करें। इसी से अर्थव्यवस्था का स्वाभाविक विकास हो सकता है।

Scanned with CamScanner

विभिन्न समाजों में उद्विकास की प्रक्रिया की सार्वभौमिकता को स्पष्ट करते हुए स्पेन्सर ने लिखा कि ईसा से 2000 वर्ष पहले मेसोपोटामिया के लोगों ने लोहे को गलाकर उससे हथियार बनाना सीख लिया था। लोहे का आविष्कार होने के कारण मेसोपोटामिया का दुनिया के लगभग दो-तिहाई हिस्से पर अधिकार हो गया। दूसरी ओर, जो समाज अपने आप को समय के अनुसार नहीं बदल सके, उनकी संस्कृति धीरे-धीरे नष्ट हो गयी। इससे स्पष्ट होता है कि समाज में उद्विकास की प्रक्रिया के लिए यह जरूरी है कि लोगों में अपनी प्राणीशास्त्रीय और प्राकृतिक दशाओं से अनुकूलन करने की अधिक से अधिक योग्यता हो।

अपने उद्विकास के सिद्धान्त के बारे में स्पेन्सर ने यह निष्कर्ष दिया कि जिस दशा को हम अक्सर 'सामाजिक प्रगति' कह देते हैं, वह प्रगति न होकर केवल एक उद्विकासीय परिवर्तन होता है। ऐसे परिवर्तन कभी एक निश्चित रेखा के रूप में नहीं होते बल्कि विभिन्नतायुक्त होते हैं। दूसरा तथ्य यह है कि समाज का विकास कभी भी पहले से ही निर्धारित कुछ विशेष स्तरों के माध्यम से नहीं होता बल्कि यह विकास लोगों के सामाजिक और प्राकृतिक पर्यावरण से किये जाने वाले अनुकूलन के अनुसार होता है। यही स्पेन्सर का सामाजिक उद्विकास का सिद्धान्त है।

आलोचनात्मक मूल्यांकन
(CRITICAL EVALUATION)

स्पेन्सर द्वारा प्रतिपादित विचारों में सामाजिक उद्विकास का सिद्धान्त सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। इसके बाद भी यह सच है कि आज अधिकांश सामाजिक विचारक स्पेन्सर के सामाजिक उद्विकास के सिद्धान्त को स्वीकार नहीं करते। जिन विशेष आधारों पर इस सिद्धान्त की आलोचना की जाती है, उन्हें संक्षेप में समझना आवश्यक है।

(1) बोआस ने लिखा है कि स्पेन्सर ने समाज के विभिन्न प्रकारों का उल्लेख करते हुए जिस क्रम में उनके विकास को स्पष्ट किया है, वह पूरी तरह काल्पनिक हैं। सभी समाज एक ही नियम के अधीन एक निश्चित क्रम में विकसित नहीं होते।

(2) यह कहना कि सैनिक और औद्योगिक समाजों की तुलना करने से सरल और जटिल समाजों की विशेषताओं को स्पष्ट किया जा सकता है, सही नहीं है। अनेक सैनिक समाजों में सामाजिक जटिलता और विभिन्नता से सम्बन्धित वे सभी विशेषताएँ देखने को मिलती हैं जिन्हें स्पेन्सर ने औद्योगिक समाजों से सम्बन्धित माना है।

(3) सामाजिक संरचना की आन्तरिक शक्तियों के रूप में स्पेन्सर ने विभिन्न मानव-प्रजातियों की भिन्नता, एक समुदाय की दूसरे समुदाय से निकटता, प्रजातियों के मिश्रण तथा पर्यावरण से किये जाने वाले अनुकूलन की भिन्नता को प्रमुख स्थान दिया है। ऐसे विचार न तो प्राकृतिक नियमों पर आधारित हैं और न ही इनके आधार पर सामाजिक उद्विकास को स्पष्ट किया जा सकता है।

(4) स्पेन्सर ने सामाजिक उद्विकास के लिए उन व्यक्तियों को किसी तरह का संरक्षण न देने को उचित ठहराया है जो दुर्बल होने के कारण जीवित रहने के लिए अयोग्य हैं। यह विचार वर्तमान युग के कल्याण राज्य की अवधारणा और सामाजिक न्याय के सिद्धान्त के बिल्कुल विपरीत है।

(5) यह सच है कि सामाजिक उद्विकास को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में स्पष्ट किया जा सकता है जिसमें होने वाले परिवर्तन सरलता से जटिलता और समानता से असमानता की ओर होते हैं लेकिन जैसा कि अब्राहम ने लिखा है, ऐसे परिवर्तन को भौतिक उद्विकास के नियमों पर आधारित नहीं माना जा सकता।

सामाजिक उद्विकास पर स्पेन्सर के विचारों तथा इनसे सम्बन्धित आलोचनाओं से यह स्पष्ट हो जाता है कि स्पेन्सर के सिद्धान्त में कुछ कमियाँ जरूर हैं लेकिन केवल इसी कारण स्पेन्सर को एक 'कल्पनावादी विचारक' नहीं कहा जा सकता। स्पेन्सर ने सामाजिक उद्विकास को स्पष्ट करने के लिए जिन नियमों का उल्लेख किया, उन्होंने सामाजिक विचारधारा को एक नया मोड़ देने में महत्वपूर्ण योगदान किया है। सांस्कृतिक मानवशास्त्र से सम्बन्धित अनेक विद्वान एक लम्बे समय तक स्पेन्सर के विचारों के आधार पर जनजातीय समाजों में होने वाले परिवर्तन की विवेचना करते रहे। स्पेन्सर के चिन्तन से यदि कुछ अन्तर्विरोधों को अलग कर दिया जाय तो वर्तमान समाजों को समझने के लिए सामाजिक उद्विकास के सिद्धान्त को निश्चय ही एक महत्वपूर्ण आधार माना जा सकता है।

Scanned with CamScanner